मोरंगे

सितम्बर–अक्टूबर, 2024

इस बार

खिड़की

कहो और मत कहो – बिज्जी

गीत कविताएँ

चील – मनीषा बैरवा
बंदर – शीतल बैरवा
बाजरे की कटाई – सुमन मीना
गले लगाया–चाईना सैनी
फिल्म – पूजा मीना
आ गी खा गी – चन्द्रप्रकाश नामा
लड़की – लक्ष्मी बैरवा

कहानियाँ

कुत्ते पर बैठकर – मोनिका मीना
शेर की आवाज – राहुल गुर्जर
अल्लू अर्जुन – अंकुश बैरवा
बंदर और मोर – कविता बैरवा

याद की धूप छाँव में

मैं इसकी क्या लगती हूँ – किरण सैनी
ऐसा नहीं कि डॉट के पूछा भी नहीं – प्रिया मीना
देर से मैं पहुँची स्कूल – विद्या मीना

सम्पादन : प्रभात
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : किशन मीना
वर्ष 16 अंक 171–172

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर
मानटाउन, सवाई माधोपुर, राजस्थान–322001
टेलीफोन 07462–220957

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

शिक्षा के ग्रामीण केन्द्र की ओर

किलोल – विष्णु गोपाल मीना

बतरस

चोरी का हक़ – कोमल मीना

बात लै चीत लै

खाती और कोडा – रोहित महावर

गतिविधि, पहेलियाँ और हीहीठीठी

खिड़की

कहो और मत कहो

एक राजा के दो रानियाँ थीं। राजा तो मर गया पर रानियाँ अभी जीवित थीं। एक का नाम था –'कहो' और दूसरी का नाम था –'मत कहो।'

कहो जब बादलों को कहती तब बादल गरजते, बिजलियाँ कड़कती और अमृत की वर्षा होने लगती।

मत कहो के मना करने से –बादल चुप रहते। अकाल पड़ता।

कहो वसंत से कहती तो हरियाली होती, रंग बिरंगे फूल खिलते।

मत कहो के मना कर देने से– पाला पड़ता, हरियाली सूख जाती।

कहो के कहने से सूरज उगता। चाँदनी होती, तारे टिमटिमाते, नदिया उमंग से भरती, झरने बहते।

मत कहो के कहने से चाँद सूरज को ग्रहण लग जाता। अँधेरी रातें होती, तारे टूटते, झरने सूख जाते।

कहो के मुँह से फूल झरते। मोती बरसते।

मत कहो के मुँह से अंगारे झरते, पत्थर गिरते।

तो बताईए आपको कहो अच्छी लगी कि मत कहो।

बिज्जी

चित्र अंजली प्रजापत, कक्षा–8, रा.उ.मा.वि. मेईकलां

गीत कविताएँ

चील

देखी मैंने उड़ती चील
आसमान से मुड़ती चील
बैठ पेड़ पर खाती चील
बहता जल पी जाती चील

मनीषा बैरवा, कक्षा–7,
समूह–हरियाली, फरिया।

चित्र मोना गुर्जर, कक्षा–5, रा.प्रा.वि. गोपालपुरा

बंदर

कितना सुंदर है वो बंदर
सबके मन के है जो अंदर
भूरा काला है वो बंदर
मन मतवाला है वो बंदर
मन की चीज चुराता बंदर
सबके मन के है जो अंदर

शीतल बैरवा, कक्षा–7,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

बाजरे की कटाई

एक लड़की
काट रही थी बाजरा
कट गई उँगली
रो रही थी जोर से
फिर लड़की मम्मी आई
बाजरे में दौड़ के

सुमन मीना, कक्षा–9,
उमंग सेन्टर, श्यामपुरा।

गले लगाया

खेत में था पानी बहुत
मैंने सोचा खेलूँ बहुत
मम्मी खेत पे आई
मुझको डाँट लगाई
फिर मम्मी ने नहलाया
मुझको अपने लगे लगाया।

चाईना सैनी, कक्षा–10,
उमंग सेन्टर, श्यामपुरा।

आ गी खा गी

बिलाई आ गी
मलाई नं खा गी
फेर वा खाँ गी
भरोटा मं घुसगी
भरोटौ खाँ ग्यौ
डूँडौ बैल चरग्यौ
डूँडौ बैल खाँ ग्यौ
पीपळ मं छंडग्यौ

प्रस्तुति – चन्द्र प्रकाश नामा,
शिक्षक, उमंग सेंटर श्यामपुरा।

चित्र सुनिल सैनी, उम्र–9 वर्ष

फिल्म

उमंग सेन्टर पर हमें
फिल्म दिखाने को कहा

हमने स्कूल का काम किया
फिर अन्य विषय का काम किया
खाना खाया मुँह धोया
फिर पाठ याद किया
स्कूल के कपड़े धोए
चाय पी और दौड़े

फिल्म शुरू हुई
लाइट चली गई
लैपटॉप में दिखाई
बैटरी चली गई
घर आ गए तो
लाइट आ गई

फिर सेन्टर पर गए
देखने लगे तो
फिल्म खत्म हो गई
फिल्म का नाम था
हद हो गई

पूजा मीना, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, श्यामपुरा।

लड़की

खेत पे जाऊँ
सब्जी तोड़ लाऊँ
वापस घर आ जाऊँ

बगीचे में जाऊँ
अमरूद तोड़ लाऊँ
वापस घर आ जाऊँ

कुँए पे जाऊँ
पानी भर लाऊँ
वापस घर आ जाऊँ

तालाब पे जाऊँ
मछली देख आऊँ
वापस घर आ जाऊँ

जंगल में जाऊँ
लकड़ी ले आऊँ
वापस घर आ जाऊँ

लक्ष्मी बैरवा, कक्षा–10,
उमंग सेन्टर, श्यामपुरा।

कहानियाँ

कुत्ते पर बैठकर

मेरी मम्मी रोज मुझे कभी कुछ कभी कुछ लाने के लिए बाजार भेजती है। बार बार बाजार जाने से मैं थक जाती हूँ। तो मुझे एक तरीका समझ में आया। मेरे घर के पास में एक कुत्ता रहता था। एक दिन बाजार जाने के लिए मैं उस कुत्ते पर बैठ गई। कुत्ता इतना सीधा और शरीफ था कि वो मुझे बाजार लेकर जाने लगा। मैंने सोचा क्यों नहीं रोज ही इस कुत्ते पर बैठकर बाजार जाया करूँ। फिर मैं रोज ही कुत्ते के ऊपर बैठ जाती। पर ऐसी बात नहीं है कि मैं रोज ही उस पर बैठकर जाऊँ। कभी कभी वो घर के पास नहीं रहता था। तो कभी कभी मैं पैदल भी बाजार चली जाती थी।

एक दिन कुत्ते पर बैठकर बाजार जा रही थी। मेरी मम्मी ने देख लिया। मैं घबरा गई। मेरी मम्मी ने कहा–'बेशरम।'

मैं इतनी जोर से भागी कि मेरी मम्मी को मैं सड़क पर नहीं दिखी। फिर बात खतम।

मोनिका मीना, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, श्यामपुरा।

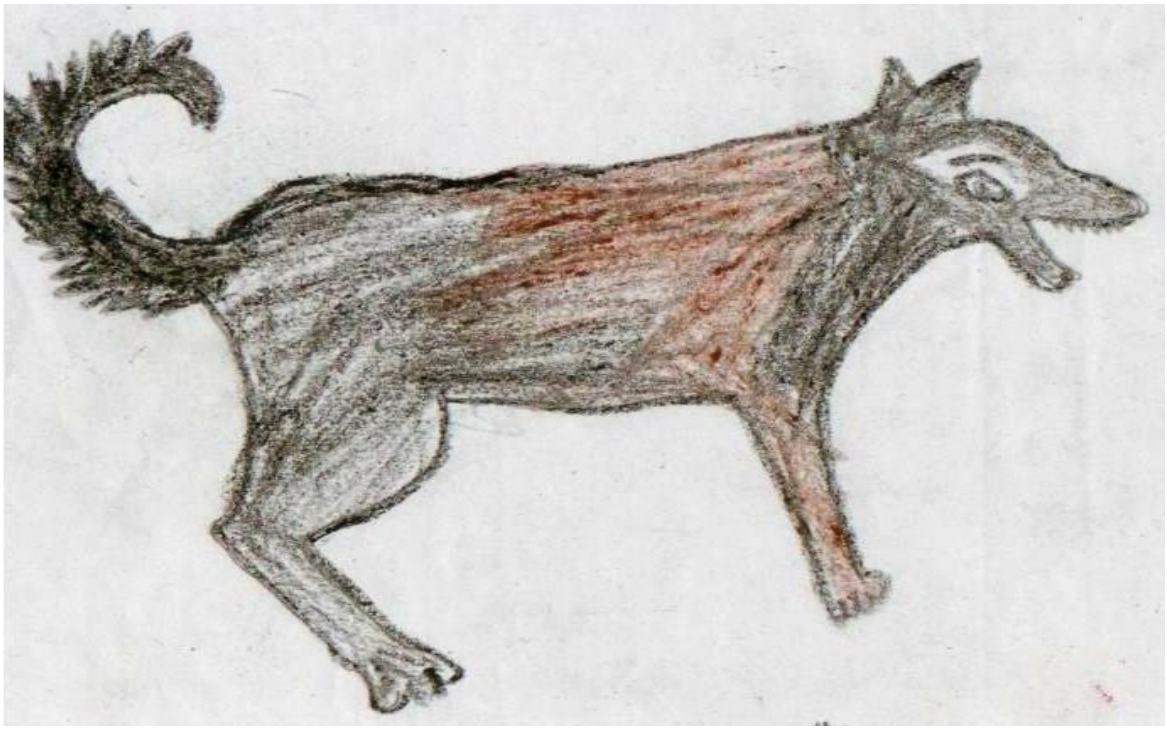

विजय गुर्जर, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

शेर की आवाज

जंगल में एक छोटी सी गुफा में एक शेर रहता था। कोई भी जानवर उससे डरता नहीं था क्योंकि उसकी आवाज बिल्ली के जैसी थी। उसने अपनी आवाज ठीक करने के काफी प्रयास किए लेकिन बोलकर देखता तो उसके मुँह से म्याऊँ ही निकलता।

चित्र अर्चना चौधरी, कक्षा–5, राजकिय विद्यालय अल्लापुर

एक दिन उसने अपनी जासूस लोमड़ी से कहा–'अब तो तुम ही कुछ कर सकती हो।'

लोमड़ी बोली– 'मैं एक सियार को जानती हूँ जो आवाज मोटी पतली करने की दवाई देता है। मैं उससे दवा बना लाती हूँ।'

लोमड़ी सियार के पास गई और बोली–'शेर की आवाज पता नहीं कैसी हो गई अजीब सी। आप उनकी आवाज ठीक हो जाए ऐसी दवाई दे दो।'

सियार ने सोचा बूढ़े होने के कारण शेर की आवाज भर्रायी सी, फसफसायी सी और ज्यादा भारी हो गई होगी। 'ठीक है बैठो। मैं दवा बनाता हूँ।'

सियार ने जड़ी बूटी की दवा बनाकर लोमड़ी को दे दी।

लोमड़ी भागी भागी आयी और शेर से बोली–'ये दवा पी लो। बिल्कुल ठीक हो जाएगी आवाज।'

शेर ने दवा पी। दो चार दिन इंतजार किया कि दवा का असर होने में वक्त तो लगता है। हफ्ते भर बाद उसने बोलकर देखा। लोमड़ी ने भी वह आवाज सुनी। शेर की आवाज पहले से भी ज्यादा पतली हो गई थी। अब तो ठीक से म्याऊँ भी नहीं बोल रहा था। उसने गुस्से में लोमड़ी को काफी बुरा भला कहा।

लोमड़ी को समझ में नहीं आया कि शेर क्या चींचीं चींचीं कर रहा है। उसने कहा–'आप थोड़ा आराम करो। मैं सियार से पूछकर आती हूँ कि और क्या किया जाए।

शेर गुस्से से देखता रहा। लोमड़ी चली गई। फिर कभी पलटकर वापस नहीं आई।

राहुल गुर्जर, कक्षा–7, समूह –लोटस, गिर्राजपुरा।

अल्लू अर्जुन

एक बार की बात है, जंगल में चार दोस्त रहते थे। एक दोस्त का नाम था – अल्लू अर्जुन। एक दिन वे चारों दोस्त घूमने के लिए चले गए। अल्लू अर्जुन को एक गुड़ की भेली दिखाई दी। वह चुपचाप जाकर उसके ऊपर लेट गया। तीनों दोस्त देखकर हैरान रह गए। उससे पूछने लगे कि तुम लेट क्यों गए हो?

अल्लू अर्जुन बोला कि 'मेरी पेण्ट की चेन खुल गई है। इसे बंद करके अभी आता हूँ। तुम लोग चलो।'

तीनों दोस्त आगे चले गए।

अल्लू अर्जुन ने गुड़ को उठा लिया और खाने लगा। तीनों दोस्तों को उसने पागल बना दिया। वे तीनों उसका इंतजार करते करते एक पेड़ के नीचे सो गए।

फिर अल्लू अर्जुन आया और बोला–'सो क्यों रहे हो, थोड़ा सा गुड़ तुम्हारे लिए भी बचा है, इसे खा लो और अब घर चलो।'

अंकुश बैरवा, 11 वर्ष, सूरज समूह, फरिया।

चित्र विजय गुर्जर, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

बंदर और मोर

एक बार की बात है। एक मोर और बंदर दोस्त थे। बंदर पेड़ों पर इधर उधर कूदता तो मोर उसे देखकर खुश होता और अपने पंखों से ताली बजाता। जब बंदर थककर बैठ जाता तो मोर कहता–'तूने तेरी कलाकारी दिखा दी, अब मेरी कलाकारी देख।
मोर अपने पंखों को फैलाकर नाचने लगता।
जंगल के सभी जानवर उसे देखने आ जाते।
एक दिन एक शेर ने मोर को पकड़ लिया। यह बात बंदर को पता चली तो वह मोर को बचाने के लिए चल दिया। रास्ते में जाते हुए वह सोच रहा था–'शेर ताकतवर है। मैं वहाँ से वापस आ भी पाऊँगा या नहीं। पता नहीं।'
फिर उसने दिमाग लगाया और शेर की गुफा के पास एक पेड़ में छुपकर मोर की आवाज निकालने लगा। शेर ने सोचा–'ये तो मोर की आवाज है। इसे भी ले आता हूँ। एक साथ दो–दो मोरों का नाच देखने को मिलेगा। फिर दोनों को एक के बाद एक खा भी लूँगा।'
शेर बाहर निकला और उस तरफ जाने लगा जिस तरफ से मोर की आवाज आयी थी। मोर बेचारा डर के मारे देख भी नहीं पा रहा था कि शेर गुफा के बाहर ही बैठा है या दूर निकल गया है। उतने में बंदर चुपके से गुफा में चला गया और अपने दोस्त को वहाँ से निकाल लाया।
शेर ने लौटकर गुफा में मोर को नहीं पाया तो वह गुस्से से नाचने लगा। पर उसके नाच को देखने वाला वहाँ कोई न था।

कविता बैरवा, फेलो, बोदल।

चित्र बलराम प्रजापत, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

याद की धूप छाँव में

मैं इसकी क्या लगती हूँ

एक बार हम जंगल में घूमने गए। वहाँ मैंने एक शेर देखा। मुझे लगा कि मैं इसके पास चली जाऊँ तो यह मुझे खा जाएगा। मुझे लगा कि भूख लगी हो तो शेर तो सबको ही खा जाता है। हिरन और चाहे गाय, चाहे मैं।
'मैं इसकी क्या लगती हूँ जो ये मुझे नहीं खाएगा।'
ये सोचकर मुझे डर लगने लगा। सोचते–सोचते मैं बहुत घबराने लगी। जबकि वो मुझे खाने नहीं आ रहा था। वो तो अपने रास्ते जा रहा था।

किरण सैनी, उमंग सेन्टर, शेरपुर।

ऐसा नहीं कि डाँट के पूछा भी नहीं

मेरे बगल में एक लड़की बैठती है। वो हमेशा लड़ती रहती है। आज कक्षा में उसने मेरे कपड़ों पर पेन चला दिया। मेरे कपड़े खराब हो गए। कक्षा में सर आए तो उसने शिकायतें करना शुरू कर दिया। सर ने मुझे डाँटा। जिसकी वजह से मैं एक घण्टे तक रोती रही। लेकिन हमारे सर इतने बुरे भी नहीं थे कि डाँट के कुछ पूछा भी नहीं।
उन्होंने मुझसे पूछा –'क्यों रो रही है?'
मैं कुछ नहीं बोली।
उन्होंने कहा–'मत रो।'
फिर उन्होंने पूरा पाठ पढ़ा दिया। मैं रोती रही।
फिर मैं उस लड़की से दूर जाकर बैठ गई।

प्रिया मीना, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, श्यामपुरा।

देर से मैं पहुँची स्कूल

मैं स्कूल जा रही थी। घर से बाहर गई तो मैंने राष्ट्रगान की आवाज सुनी। मुझे स्कूल जाने में देर हो चुकी थी। मैं इतना तेज दौड़ी कि दो बार तो सड़क पर ही गिर गई। मैं पहुँच गई और रुक गई।
देर से आने वाले बच्चों की अलग से लाइन बनाई गई थी। मैं उसी में जुड़ गई।
फिर मैडम ने देर से आने वालों से स्कूल में झाड़ू लगाने को कहा। सब झाड़ू निकालने लगे।
मुझसे मैम ने कहा–'घर पर काम नहीं करती है ना?'
झाड़ू लगाना रोककर मैंने कहा–'आपको कैसे पता चला?'
मैम बोली–'पीछे मुड़कर देख। तेरे पीछे पाँच किलो कचरा पड़ा है।'
फिर मैम ने मुझे कालांश में बैठा दिया। वे हमारी प्राधानाचार्य हैं।

विद्या मीना, कक्षा–9, उमंग, श्यामपुरा।

इस अनुभव के साथ यह कविता भी पढ़ें –

चम्पा का फूल
देर से मैं पहुँची स्कूल
एकदम चिल एकदम कूल
सर ने मेरा बैग उतारा
और दिया चम्पा का फूल।

चित्र सुलोचना सैन, जगनपुरा

सुशील शुक्ल

किलोल

(स्कूल को मेळो)

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा अपनी पहली उदय सामुदायिक पाठशाला को चलते 18 महिने हो गए थे। स्कूल के प्रति समुदाय का लगाव और विश्वास बढ़ता जा रहा था। परन्तु अभी तक यह जुड़ाव बच्चे और उनके अभिभावकों के अलावा कुछ एक जागरूक लोगों तक ही था। हम चाहते थे कि स्थानीय समुदाय के अलावा आस–पास के गाँव, शहर के लोग, स्थानीय प्रशासन और शिक्षा में काम करने वाले दूसरे संस्थान भी हमारे काम को जानें, समझें साथ ही इसे और बेहतर करने के लिए अपने सुझाव भी दें।

हमें जरूरत थी एक ऐसे आयोजन की जिसके माध्यम से हम लोगों को स्कूल पर ला सकें और दिखा सकें कि हम किस तरह का काम कर रहे हैं। उस दौरान हम 7 लोग (मैं, मनीश, मुकेश, रमेश, संजय, दुर्गा और अंजूलक्ष्मी) एक चित्रकला की कार्यशाला कर रहे थे। जिसमें रिसोर्स–पर्सन के रूप में अरविंद जोधा को बुलाया था। इसी कार्यशाला में बातों बातों में हमने पिछले 8 महिने में किए गये रचनात्मक काम को प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदर्शित करने का निर्णय लिया। तय किया कि इसमें बच्चों के बनाए चित्र, कहानी, कविता, मिट्टी के खिलौने, स्कूल समाचार पत्र, स्थानीय कला, महिलाओं के साथ किया गया रचनात्मक कार्य, शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम, शिक्षण सामग्री, हमारे दर्शन, कक्षा प्रबंधन और

अक्सर पूछे जाने वाले सवालों (पाठ्यपुस्तक, हेड मास्टर, लाल पेन, स्कूल बैग, गणवेश, घंटी आदि का उपयोग क्यों नहीं किया जाता?) के जवाबों को प्रदर्शित किया जाएगा।

यह 2006 का फरवरी का महीना चल रहा था। हमने बिना अधिक विचार किये 6 मार्च की तिथि तय कर ली। अब हर चीज को जुटाने, सँजोने–सँवारने का काम आरंभ हो गया। हम लोग सुबह 7 बजे स्कूल के लिए ऑफिस से निकलते और 2 बजे तक बच्चों के साथ काम करते और किया गया काम समेटकर 3 बजे तक ऑफिस आ जाते। संस्था के संस्थापक पृथ्वीराज जी मीना ने एक बार फिर मदद करते हुए अपना पटेल नगर वाला घर हमें दे दिया था। लगभग तीन साल तक यही हमारा ऑफिस था। यहाँ हम सुबह 7 से रात 8 बजे तक काम करते। काम के दबाव में अतिरिक्त समय देने की माँग इतनी बढ़ाई कि हममें से कुछ साथियों ने तो नहाना धोना भी छोड़ दिया था। अंजूलक्ष्मी के घर से तो सवाल भी पूछे जाने लगे कि ऐसा कैसा काम है जिसके लिए 8 बजे तक काम किया जाता है? काम था किलोल की तैयारी। हमने तय किया कि अजूं को जल्दी भेज देंगे। सर्दी की रातों में उन दिनों सड़कें जल्दी सूनी हो जाती थी। घर जाने के लिए कोई साधन न होने पर सुरक्षा के नजरिये से उसे मनीष अपनी मोटर साइकिल से घर छोड़ते हुए जाता। रही बात हमारी तो हम कहाँ जाते? हम तो अपने घरो से बहुत दूर थे तो ना कोई कहने वाला और ना पूछने वाला। रात 10 बजे तक काम करते और थक जाने पर वहीं सो जाते। अगले दिन उठकर स्कूल भाग जाते।

इस भागम भाग के बींच भी हम बहुत खुश थे, गीत गाते, मजा करते, और हँसते–खेलते। भूख लगने पर खाना बनाते, चाय बनाते, बर्तन माँजते और साफ–सफाई करते। रात में चाय पीने का मन करने पर एक ही जगह थी जहाँ चाय मिल सकती थी– 'रेलवे स्टेशन'। जोधा और संजय के लिए तो चाय एनर्जी ड्रिंक थी। उन दिनों उनके कहने पर हम कई बार रात में स्टेशन पर चाय पीने जाते। एक रात 11 बजे अचानक क्रिकेट खेलने का मन किया तो बैट बॉल लेकर रेलवे स्टेशन पर चले गये। स्टेशन के बाहर पार्किंग में लगे टावर की मरकरी लाईट में हमने क्रिकेट खेला। लोगों ने हमें अजीब सी निंगाहों से देखा तो हमें अलग ही खुशी का अहसास हुआ।

हमने काम इतना फैला लिया था कि सिमटने का नाम ही नहीं ले रहा था। मनीष भी कुछ काम अपनी पत्नी के लिए घर ले जाता। ताकी वह भी मदद कर सके। जोधा ने अपने एक परिचित भँवर सिंह को जयपुर से बुला लिया था। वह हमारे लिए खाना बना देता और हम काम करते रहते। खाली समय में वह भी हमारे साथ जुट जाता। लगभग 18–18 घंटे काम करने से हम थके–थके रहते।

इधर पाठशाला पर भी साफ–सफाई और गारा लिपाई का काम आरंभ कर दिया। ताकि प्रदर्शनी के समय ग्रामीण कला और संस्कृति को भी प्रदर्शनी का हिस्सा बनाया जा सके। बच्चे कई दिनों से इस हल–चल को महसूस कर रहे थे। वे यह तो समझ गये थे कि कुछ बड़ा होने वाला है। इस वजह से बच्चों की उपस्थिति शत–प्रतिशत रहती। हमने सारा काम बच्चों के नियमित शिक्षण को प्रभावित किए बिना किया।

आखिर वह दिन आ ही गया जिसके लिए हम जुटे हुए थे। कासलीवाल ने एक दिन पहले ही सामान भेजना और टेंट लगाना आरंभ कर दिया। हम भी अपना सारा सामान ऑफिस से एक जीप में भर कर स्कूल पर आ गये। इधर टेंट वाले टेंट लगाते और पीछे की तरफ कनात लगाते हुए आगे बढ़ते जाते। हम भी अपनी योजना अनुसार कुर्सी टेबल लगाते और उन पर प्रदर्शन हेतु मिट्टी के खिलौने, लेख, किताबें, पठन सामग्री व अन्य चीजें जमाते जाते। इस बींच आप–पास से गुजरने वाले लोग हमसे पूछते यहाँ क्या होने वाला हैं?

''कला प्रदर्शनी'' हम उनको बताते। पर उन्होंने यह नाम पहले कभी सुना नहीं था तो उन्हें कुछ समझ नहीं आता और फिर पूछते–

''कोई शादी–सम्मेलन है?''

हम कहते ''नहीं''

''यज्ञ है?''

''नहीं''

''कोई नेता आ रियोय काँई?'' अब वे परेशान होकर अपनी गाँव की भाषा में बोलने लगे।

''नहीं''

परेशान होकर एक ने कहा, ''तो फेर काँई लफड़ो है?''

हमने कहा–''स्कूल का कार्यक्रम है, जिसमें बच्चों का काम दिखाया जाएगा।''

''अयाँ कै नी कि स्कूल को मेळो है। परदर्सनी परदर्सनी काँ कै रियोय।'' उसने कहा।

''वही–वही'' हमने भी अपनी सहमती दी और उस दिन से यह समुदाय व शिक्षा का मेला बन गया। जिसे किलोल कहा जाने लगा।

टेंट लगाने वालों ने शाम होते होते डिस्प्ले हेतु कनातों पर सफेद कपड़ा लगाना चालू किया। हम भी आलपिन, टेप, क्लिप के साथ बच्चों और समुदाय की महिलाओं द्वारा तैयार की पेंटिंग और स्कूल के काम के फोटोज लगाने लगे। काम करते–करते रात के 10 बज गये। जगनपुरा से ही किसी ने हमारे लिए चाय भिजवा दी। खुले में ठंड बहुत लगती है। सबने अपने गर्म कपड़े पहले ही पहन लिए थे। इधर टेंट वालों ने टेंट लगाने का काम बंद कर दिया और टेंट के सामान में जाकर सो गए।

जब उनसे कहा तो कहने लगे, ''अब सुबह लगाएँगे। हम थक गये है।''

हमने उन्हें समझाने की बहुत कोशिश की। पर उन्होंने कहा, ''हमारा तो रोज का काम है। ऐसे दिन–रात काम करेंगे तो कितने दिन काम कर पाएँगे।'' उनकी बात भी सही थी। थके हुए तो हम भी थे। पर हमारी बात और थी। मनीष ने उनके सेठ राजकुमार कासलीवाल को भी फोन लगाए। पर बात नहीं बनी।

उसने कहा, ''मजदूर लोग हैं, अब नहीं उठेंगे। मैं सुबह जल्दी लगवा दूँगा। आप चिंता ना करें।'' हमसे जितना हुआ हमने काम किया। रात के ग्यारह–बारह के बीच हमारे साथी भी इधर–उधर जाकर दुबक गये। मैंने और मनीष ने कुछ देर और काम किया। मैने मनीष को सोने के लिए बोला पर उसने मना कर दिया। मुकेश भी घर जाते वक्त चलने के लिए बोला था। पर उसके साथ भी कोई नहीं गया। मैं तो स्कूल पर ही सोता था।

मनीष ने कहा, ''जाकर थोडी देर आराम कर ले कल भी बहुत काम है।'' यह सोचकर रजाई के लिए मैं अपने कमरे में गया तो देखा मेरी रजाई में जोधा और दुर्गा आराम से सो रहे थे। मैं खाली हाथ मनीष के पास आकर कुर्सी पर बैठ गया।

उसने पूछा, ''रजाई?''

मैने कहा, ''रजाई में तो दुर्गा और जोधा सो रहे हैं।'' आधी रात से ज्यादा समय गुजर चुका था। मैने और मनीष ने तीन घंटे कुर्सी पर बैठे–बैठे ही गुजारे। सुबह पाँच बजे मुकेश दूध ले आया। हमने चाय बनाकर पी और टेंटवालों को जगाया। बड़ी मशक्कत के बाद वे जगे और काम पर जुट गये। हमारी टीम भी तैयार थी। सबने जल्दी–जल्दी काम किया और भरसक कोशिस की की सारी कलाकृतियाँ, चित्र और फोटो डिस्प्ले कर दें। पर ऐसा नहीं हो सका। उद्घाटन का समय हो गया था और लोग–बाग आने लगे थे। इसलिए हमने बाकी की सामग्री को रख दिया।

प्रदर्शनी लगभग 500 मीटर तक फैली हुई थी और लगभग 1500 वस्तुओं का प्रदर्शन हमारी तरफ से किया गया था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला कलेक्टर राजेश यादव थे। उन्होंने प्रदर्शनी में बच्चों द्वारा किए गए रचनात्मक कार्यों को देखते हुए करीब दो घंटे बिताए। किलोल में गाँव और शहर से लगभग 1000 लोग आये।

स्थानीय लोगों और हमारे लिए यह पहला अवसर था जब खेतों में कला प्रदर्शनी आयोजित की गई। बच्चे, बूढ़े जवान सभी ने प्रदर्शनी को देखा, सराहा और स्वयं ने भी अपनी कलात्मक अभिव्यक्ति को अंजाम देते हुए मिट्टी और रंगों पर हाथ आजमाए। महिलाएँ भी एक साथ समूह बनाकर सबसे बचकर घूँघट काढे हुए आईं। कुछ रचनाएँ, फोटोग्राफ और पेंटिंग तो बच्चों और गाँव वालों को इतनी अच्छी लगी कि वे उन्हें मना करने के बाद भी प्रदर्शनी के बीच से ही निकाल ले गये।

दोपहर होते होते हम सब इतने थक गये कि जहाँ जगह मिली वहीं बैठ गए और उठे ही नहीं। जबकि हमने सारा काम और जिम्मेदारी तय की हुई थी। जैसे विजिटर्स को कौन अटेंड करेगा। फीड़बैक काउण्टर पर कौन रहेगा। प्रांगण में कौन संभालेगा और आवारा पशुओं को

कौन भगाएगा? पर अब कोई भी उठने को तैयार नहीं था। सब एक दूसरे से काम करने की फरियाद करने लगे पर करता कोई नहीं। ऐसे में हमारी पाठशाला के बच्चों ने ही प्रदर्शनी को संभाला। अब वे ही जानवर भगाते, लोगों को विजिट करवाते और प्रदर्शनी में लगे सामान की हिफाजत भी करते। अब हम बच्चों के बुलाने पर ही उठकर जाते। लगभग 3 बजे के बाद लोगों का आना थम गया।

अब बारी थी सब कुछ समेटने की। हालत कुछ करने की थी नहीं पर करना पड़ा वरना टेंट वाले टेंट खोलते समय सब बर्बाद कर देते। अगले दिन हमने छुट्टी रखी और जीभर कर सोए और नहा धोकर स्कूल आए। इस आयोजन की सफलता से उत्साहित होकर हमने इसे हर साल आयोजित करने का निर्णय लिया और हम नई–नई थीम के साथ शिक्षा का सामुदायिक उत्सव मनाने लगे। इस उत्सव का 'किलोल' नाम सबकी जबान पर चढ़ गया।

विष्णु गोपाल, निदेशक, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र।

रवीना, उम्र–13 वर्ष, समूह–सूरज

बतरस

नाटक – **चोरी का हक**

दृश्य–1

(दो लड़कियों द्वारा, एक को पीटने का हो हल्ला, शोरगुल।)

प्रिंसा – अरी प्रिया–टिंका तुम मुझे क्यों पीट रही हो?

प्रिया – तूने हमारी सब्जी चुरायी है।

प्रिंसा – तुम्हारी सब्जी कहाँ है ?

टिंका – वो अभी हम उगाएँगी।

प्रिंसा – कहाँ उगाओगी ?

प्रिया – बाड़ी में।

प्रिंसा – बाड़ी कहाँ है?

टिंका – वो अभी हम देखेंगी।

प्रिंसा – पर तुम तो मुझे अभी पीट रही हो। क्यों?

प्रिया – सब्जी चुराओगी तो पिटोगी ही और क्या ?

प्रिंसा – पर पहले तुम सब्जी उगा तो लो।

टिंका – सब्जी चुराने के बाद तुम पकड़ में न आओ तो।

प्रिया – इसलिए हम पहले ही तुम्हारी मरम्मत कर रही हैं।

(पीटने का हो हल्ला, शोरगुल।)

दृश्य–दो

प्रिया – अरी प्रिया हमारी बाड़ी की सब्जी कहाँ गायब हो गई।

टिंका – जरूर प्रिंसा ने चुरायी होगी।

प्रिया – चलो चलकर उसकी मरम्मत करते हैं।

टिंका – चलो जल्दी चलो।

(दोनों जाती है और प्रिंसा को पीटने के लिए तैयार होती हैं।)

प्रिंसा – रुको रुको रुको। बात क्या है। वो तो बताओ।

प्रिया – तुमने हमारी सब्जी चुरायी है।

प्रिंसा – हाँ चुरायी है।

टिंका – इसलिए हम तुम्हारी मरम्मत करने आयी हैं।

प्रिंसा – लेकिन इस चोरी के लिए तो तुम मुझे सब्जी उगाने से पीट चुकी हो।

प्रिया – हाँ लेकिन...।

प्रिंसा – अब तो चोरी करना मेरा हक है। मैं चोरी नहीं कर रही हूँ। मैं तो अपना हक ले रही हूँ।

टिंका – हक की बात तो सही है लेकिन...।

प्रिंसा – बात सही है तो बात को मानो।

(तीनों एक दूसरे की ओर देखती है और हँसने लगती है।)

कोमल मीना, कक्षा–9, उमंग सेन्टर, जगनपुरा।

गतिविधि

- संवादों को याद करके, इस नाटक को समूह में खेलो।
- अपनी और अपने दोस्तों के बीच की आपस की इस तरह की मजेदार बातों को नाटक के संवादों में लिखकर मोरंगे को भेजिए।

सोनू उम्र–8 वर्ष, समूह–कदम्ब

बात लै चीत लै

खाती और कोडा

चित्र वर्षा, कक्षा–3, शेरपुर

एक खाती हियो। वा खाट बणावा के काणैं लाकड़ी काटबा जंगल मं गियौ। सुबे–सुबेई जब वा गियो तो उकू एक सीदो सो खेजड़ी को पेड दीख्यौ। तो वा उ पेड़ कू काटबा लाग्यौ तो उ खेजड़ी का पेड मं कोड़ा का तीन बच्चा हिया। तो वा खाती जेंइ करवाळ्या की देबा लागियो पेड़ पै काटवा काणैं तो कोड़ा नं खातीका से की –

'खाती खाती रै
खेजड़ियो मत काटै म्हारा बीर
खेजड़िया मं म्हारौ कानकानीराम
खेजड़िया मं म्हारौ रामलच्छीराम
खेजड़िया मं म्हारी डबूकड़ी।'

उ कोड़ा के बेटा हिया जिको नाँव कानकानीराम और रामलच्छीराम हियौ। एक बेटी ही जिको नाम डबूकड़ी हियो। कोड़ा की आवाज सुणतांई खातीकौ डरपगियो कि 'काई पतो भई कि काई बोल रियो। इस्यौ लगै कटि भूत–फूत तो नीं उठिधायो।' तो फेर खाती डरप गियो। तो वा डरपर केनी उल्टो आबा लगियो। तो कोई दो–चार मोटियार जंगल मं जा रिया हिया।

तो वा खातीकानं उनकू बुलायो कि 'अरे अटि आजो–आजो। ई खेजड़ी मं कणेकाई बोल रियो। मैं इकू काटबा लगियो जब।'

उनने कि के ''अरे काँई बोलेगो सुबे–सुबे' तो फेर वा खाती का नं की ''अरे थम चलो तो सई।' फेर वा खाती उनकू पेड़ गडे ले गियो। तो वे आदमिन नं की–'लै अब काट देखा काँई बोलेगों।'

खाती को फेर उ खेजड़ी कू काटबा लगियो तो फेर वा कोडा बोली के –
''खाती खाती रै
खेजड़ियो मत काटे म्हारा बीर
खेजड़ियो मं म्हारो कानकानीराम
खेजड़ियो मं म्हारो रामलच्छीराम
खेजड़ियो मं म्हारी डबूकड़ी।''
उकी आवाज सुण कैनी सबकू अचंभो होयो कि 'सई तो है भई! इमें बोल कॉंई रियो। इमें काई दिख भी नीं रियो।'' तो फेर उननं पूरान नं की थोड़ी देर पाछे कि ''तू तो काटगाल कि देखां कॉंई है जो दिखी जागी पाछे।'' तो बाद मं वा खातीकानं उ खेजड़ी कू काटर कैनी पटक दियो। उकू काट दियो तो उमें

चित्र रोहित महावर, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर अल्लापुर

स कोड़ा उड़गी और उका बच्चा हिया छोटा वे बच्चा उड़बाड़ा हिया तो उन सबकी नंगै कोड़ा और उका बच्चान पे पड़ी तो सबकू पतो चल्यो कि 'अरे यार अपण नं तो गलती कर दी। इमें तो या कोड़ा बोलरी ही बिचारी और इका बच्चा हिया।'

उन सबड़ा आदमीन नं की उ खातीका सूं कि ''तू लेर जा अब इन नं। तू पाड़।'
तो खाती का नं की 'ठीक ए भाई ले जांगू।' तो खातीकौ उन तीन बच्चान कू खुदके घण्णे ले गियो। खातीकौ उन कोड़ा का बच्चान कू बढ़िया दाणों डाल देवयो और पाणी पिवा देवयो।
उ खाती के अेक गुरगल (पक्षी) बॉंदी लगरी ही। गुरगल ही घर मं पाणी भरई और झाडू काडई तो या बात उ कोडा कू पतो लगी कि 'उ खातीका के एक गुरगल बॉंदी

लगरी।' तो उनं सोची–'मैं म्हारा बच्चान का समाचार उ गुरगल से पूछ लूं।'
सुबे जार केनी कुआं पे बैठगी ही। म्हां गुरगल आई तो कोड़ा उ गुरगल से कई के –
''गुरगल गुरगल री ...
काँई करे रे म्हारो कानकानीराम
काँई करे रे म्हारो रामलच्छीराम
काँई करे री म्हारी डबुकड़ी।''
गुरगल नं कोड़ा से कई –
''कोड़ा कोड़ा री
गिल्लू डण्डा खेले थारो कानकानीराम
गेंद खेले छे थारो रामलच्छीराम
गुड्डी फुतड़िया खेल थारी डबूकड़ी।''
उनका समाचार सुणकेनी कोड़ा खुस होगी कि 'म्हारा बच्चा बढ़िया खुशी से रेरिया। खूब मौज है उनकू।'
तीन–च्यार म्हिंना होगा तो फेर कोड़ा नं सोची की 'बालकणनी याद आरी तो इसे करूँ कुँआ पे जार कैनी समाचार लियाऊँ।'
कोडा सुबे ही जारकेनी कुआँ का पाटा पे जारकेनी बैठगी। कोड़ा उ गुरगल की बाट न्हाणे कि कब आगी? गुरगुल स्याम की आयी। वा कोड़ा बी स्याम तक बैठी री। जब गुरगल आयी तो कोड़ा नं उ गुरगल से पूछी –
''गुरगल गुरगल री ...
काँई करे रे म्हारो कानकनीराम
काँई करे रे म्हारो रामलच्छीराम
काँई करे री म्हारी डबूकड़ी।''
तो फेर उ गुरगल नं कोड़ा से कई –
''कोडा री कोडा री ...
ग्यार खोदे छे थारो कानकानीराम
ग्यार भरे छे थारो रामलच्छीराम
ग्यार पटकै छै थारी डबूकड़ी।''
या सुणकेनी कोड़ा कू भौत दुख होयो। उनं सोची के किसे म्हारा बच्चान ग्यार खोदरिया होगा, किस्या पटकरिया होगा और किस्या भररिया हेगा। उनकू तो म्हा भौत दुख है और न्हा मैं बड़िया आराम से घूम री।
कोडा अथा दुख सूं भरगी।

रोहित महावर, फैलो, उदय किरण फैलोशिप सेंटर अल्लापुर।

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1

ऐ री ऐ री हड़द की सी पेड़ी
चून चट्टा लेगी, घणा दुख देगी।

2

बाप तो है खरदड़ो
बेटो है लिपसणौ।

3

ऐ सखी मैं भारी भोड़ी
हाथ लगाने की चोरी
पूछेगी तो कहूँगी क्या
माँगेगी तो दूँगी क्या?

4

खम्भ
खम्भ कै ऊपर ढम्मा
ढम्मा कै ऊपर आळ्यौ
आळ्या कै ऊपर सूँ सूँ
सूँ सूँ कै ऊपर टमटम
टमटम कै ऊपर टीलो
टीला कै ऊपर घास।

5

एक बड़
जिकै तीन सौ साठ जड़
बारा जोड़्ड़ा
वाकै तीन फड़

रोहित महावर, फैलो,
उदय किरण फैलोशिप सेंटर अल्लापुर

चित्र राजेश, उम्र–11 वर्ष, समूह–तारा

हीहीही–ठीठीठी

एक आदमी ने गली के नुक्कड़ पर एक बच्चे से पूछा–'बेटे आपके पापा का नाम क्या है?'
पिंकू– 'अंकल अभी मैंने उनका कोई नाम नहीं रखा है, अभी तो पापा ही कहता हूँ।'

टीचर – क्यों पिंकू होमवर्क क्यों नहीं किया।
पिंकू – मैम, लाइट चली गई थी।
टीचर – तो लाइट आने पर कर लेता।
पिंकू – मुझे लगा मैम कहीं मेरे होमवर्क करने से लाइट ना चली जाए।

कंजूस (अपने बेटे से) – मैं चाहता हूँ बेटे कि तू बड़ा होकर वकील बने।
बेटा – क्यों पापा।
कंजूस – ताकि मेरा काला कोट तेरे काम आ जाए।

टीचर – विदेश में 15 साल की उम्र में बच्चा अपने पैरों पर खड़े हो जाता हैं।
पिंकू – लेकिन मास्टरजी अपने देश में तो एक साल का बच्चा भागने लगता है।

मैडम – क्या तुम चीनी भाषा पढ़ लेते हो?
पिंकू – हाँ मैम, अगर हिन्दी या अंग्रेजी में लिखी हो तो पढ़ लेता हूँ।

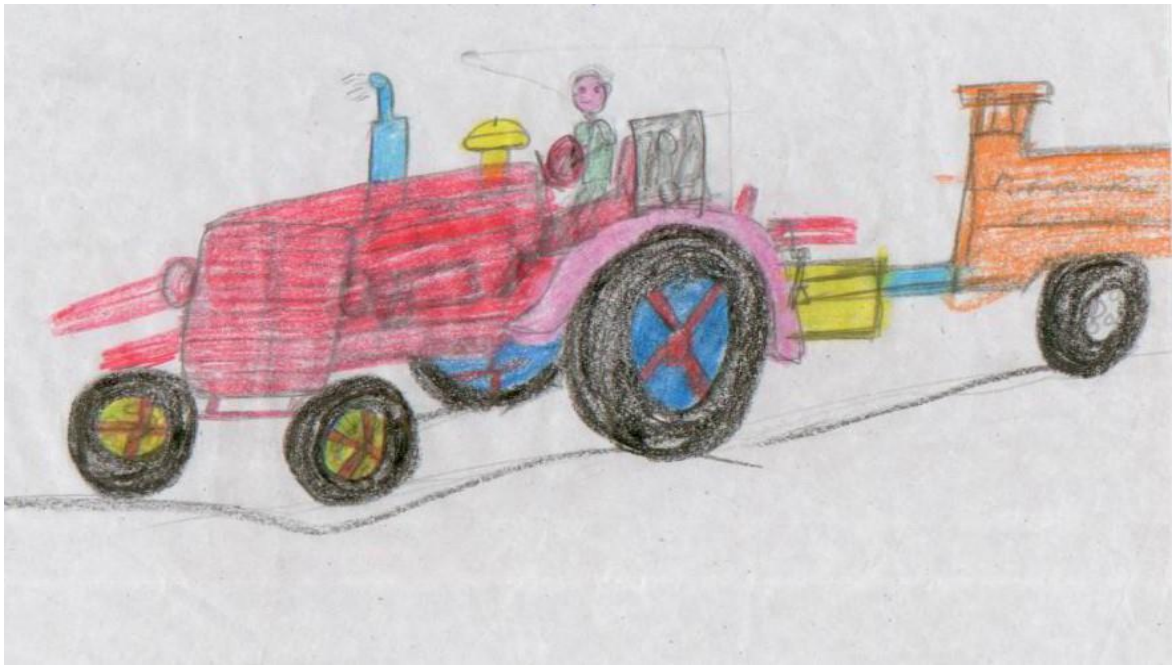

जिया लाल, समूह–वीर शिवाजी

भोला शंकर, शिक्षक, उमंग शिक्षण केन्द्र रांवल

पहेलियों के जवाब

1 बिच्छू
2 नारियल
3 ओला
4 मुँह
5 बरगद